सुधा ओम ढींगरा

घपलेबाज

डुगडुगी की आवाज के साथ ही एक आवाज उभरती है. साहेबान, कद्रदान. . .अल्लाह के नाम पे, दाता के नाम पे, मेरे जमूरे की बात सुनिए, साहेब वह बहुत दु:खी है। वह आपसे पैसा नहीं चाहता, बस चाहता है तो आजादी और छुटकारे की तरकीब। डुगडुगी फिर बजी . . .साहेबान हंसिए मत। वह भी जानता है आजादी 1947 में मिली थी और वह पूरे मन से उसे भोग रहा है। सड़कों पर लघुशंका कर, यहां-वहां थूक कर, पान की पिचकारियों से दीवारें रंग कर, गंद के ढेर लगा कर, प्रदूषण फैलाकर, वह अपनी आजादी का आनंद मना रहा है। साहेबान क्या हुआ अगर टीबी की बीमारी में देश सबसे आगे है, डेंगू से लोग मर रहे हैं। वह तो चैन की बंसी बजा कर आजाद सोता है और, फिर सोए भी क्यों नहीं! जब कानून सो रहा है और उसे पारित करने वाले आजादी से सांस ले रहे हैं क्योंकि उन्हें याद है, देश को आजाद करवाने के लिए कितने लोगों ने कुर्बानियां दीं, जेल में बंद रहे, इसलिए वे कानून की बंदिशों से सबको स्वतंत्र रखना चाहते हैं। क्या कहा आपने? मैंने सुना नहीं जरा जोर से कहें मेरा जमूरा अगर आजादी का मतलब समझता है तो वह और कौन सी आजादी चाहता है, और छुटकारा किससे!

साहेब लोचा तो यहीं है तभी आपकी मदद चाहता हूं। दरअसल मेरा जमूरा साहित्यकार है। अपनी ही बनाई जंजीरों में जकड़ा गया है। न तोड़ पा रहा है, न छूट पा रहा है। जबसे सोशल साईट्स से जुड़ा है, पगला गया है। बेपेंदी का लोटा तो पहले ही था। अब बहुत रंग बदलने लगा है। किसी को सम्मान मिलने की खबर पढ़ता है, किसी की पुस्तकें छपने का समाचार सुनता हैं, ईर्ष्या और द्वेष दो बहनों से उसने दोस्ती कर ली है, बस उनके साथ मिलकर सिर धुनता रहता है। उसे गुस्सा आता है, जब दूसरे साहित्यकारों की तारीफ के पुल लोग बांधते हैं। वह बीमार हो गया है। डॉक्टरों ने कहा है, इसे इस मानसिकता से छुटकारा दिलवाओ, ताकि यह खुल कर सांस ले सके। इसका दम घुटने लगा था।

साहेब कैसे छोड़ दे सोशल साईट्स! आपको राज की बात बता रहा हूं, बस अपने तक रखिए, किसी को कहियेगा मत। उच्च स्तर का लेखक तो वह कभी नहीं था, पर जोड़-तोड़ करके उसने कई सम्मान जरूर हथिया लिए थे। फिर भी गुमनामी के अंधेरे उसका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। फेसबुक पर विरोधाभासी टिप्पणियां देकर, रोज-रोज नई रचनाएं सुना कर, नए-नए चित्र डाल कर मेरे जमूरे ने जितनी शोहरत हासिल की है, जनाब आप सोच भी नहीं सकते। समस्या तो यही आन खड़ी हुई, मेरे जमूरे को किसी और की वॉल पर लिखा कुछ भी पसंद नहीं आता, बस कूद पड़ता है, विमर्श के नाम पर वाद-विवाद में। सिर फूटने-फुटाने तक की नौबत आ जाती है।

कुछ दिन रोकता हूं उसे, फेसबुक पर नहीं जाने देता। साहेब वह अवसाद में चला जाता है। फिर कुछ ऐसा लिख देता है, जिससे वह चर्चा में आ जाता है। जमूरे की आत्ममुग्धता लक्ष्मण रेखा पार कर चुकी है, झूठे अहंकार का रावण उसका अपहरण कर चुका है। उठा-पटक के तरह-तरह के विचार उसके मस्तिष्क में घूमते रहते हैं। मेरा जमूरा तिकड़म बाज और जुगाड़ू तो पहले से ही था, अब चालबाज भी हो गया है। कैसे! साहेब क्या-क्या दुखड़ा रोऊं! बड़े-बड़े साहित्यकारों की देखा-देखी जोड़-तोड़ करके लिया गया सम्मान उसने लौटा दिया। मैं तो देखता ही रह गया। सम्मान लौटाया है तो उसके साथ मिला पैसा भी लौटाता। साहेब वह तो गटक गया। उसे नहीं लौटाया। मुझ से सलाह लेता तो जरूर रोकता। सम्मान उसकी सृजना, उसकी कृति को दिया गया था। उन कृतियों का अधिकार था उस सम्मान पर। लौटा कर उसने अपने ही लेखन का अपमान किया है। पर ज्योंही मैंने कुछ कहा, वह गुर्राने लगा- आपको पता है 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में है।', 'लेखकों को दबाया जा रहा है', 'कलम को रोका जा रहा है।' कितने काण्ड हुए, निरीह, अबोध जनता मारी गई। उनकी इनक्वायरी होनी चाहिए। साहित्यकारों का समाज के प्रति भी कोई दायित्व होता है। आप समझ नहीं रहे, सम्मान लौटा कर मैंने अपना विरोध दर्ज करवाया है।

साहेब साहित्यिक राजनीति से अनजान जरूर हूं, बेवकूफ नहीं। समझ गया 'हिडन एजेंडा' कुछ और है। मैं भी कड़क हो गया, जब हत्या काण्ड हुए थे, तरह-तरह के घटोले हो रहे थे, पत्रकार मारे जा रहे थे, स्साले तब तेरी कलम सील क्यों गई थी? उसकी धार तेज कर चीर डालता सब अपराधियों के गिरेबान। तुम्हारे विरोध को सलाम करता। सच बता इस विरोध के भीतर की मंशा क्या है? जनाब सब उगल गया। तब से सकते में हूं। सिर पकड़ कर बैठा हूं। मेरे जमूरे ने मुझसे ही छुपाकर हिन्दी भाषा के विकास और अनुवाद का एक एनजीओ खोला हुआ था, जिसमें बाहर के देशों से लाखों का अनुदान आता था। कई सरकारी पदाधिकारी भी साथी थे। वर्तमान सरकार ने एनजीओ पर शिकंजा कसा तो लपेट में आ गये सब। एनजीओ बंद हो गया। कइयों की खीर, माल-पुए और हलवा हाथ से छूट गया। कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना। गुस्सा किसी का, निकला कहीं और।

सही कहा था मैंने, साहेब यह चालबाज हो गया है पर अब पता चला यह तो घपलेबाज भी है। मैं अपने जमूरे को इन प्रवृत्तियों से छुड़वाना चाहता हूं, आजाद करवाना चाहता हूं।

डुगडुगी फिर बज उठती है. . .साहेबान कद्रदान. . .आपके पास कोई हल हो तो बताएं उम्र भर आपका एहसान मानूंगा।

6 Larksmere Court Markham Ontario L3R31